१०. मराठी सत्ता का विस्तार

मराठों द्वारा लड़े गए स्वतंत्रता युद्ध के प्रारंभ में मुगल सत्ता आक्रामक थी तो मराठों की नीति सुरक्षात्मक थी। स्वतंत्रता युद्ध के अंत में स्थिति उलट गई । मराठों ने आक्रमण की और मुगलों ने सुरक्षा की नीति अपनाई। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मराठों ने मुगलों को पराजित कर लगभग संपूर्ण भारत में अपनी सत्ता का विस्तार किया । इस पाठ में हम उसका अध्ययन करेंगे।

शाहू महाराज को मुक्त किया गया : औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात दिल्ली की सत्ता को लेकर उसके पुत्रों में संघर्ष प्रारंभ हुआ । शाहजादा आजमशाह दक्षिण में था । राज सिंहासन पाने के लिए वह बड़ी तत्परता से दिल्ली की ओर चल पड़ा। राजपुत्र शाहू उसके अधिकार में थे । आजमशाह ने सोचा कि यदि शाहू महाराज को मुक्त किया जाए तो महारानी ताराबाई और शाहू महाराज के बीच छत्रपति की गद्दी को लेकर विवाद उत्पन्न होगा और मराठी सत्ता निर्बल हो जाएगी । इसलिए उसने शाहू महाराज को मुक्त किया।

शाहू महाराज का राज्याभिषेक : मुक्त होते ही शाहू महाराज महाराष्ट्र की ओर चल पड़े । कुछ मराठी सरदार उनसे आकर मिले परंतु महारानी ताराबाई ने छत्रपति पद पर शाहू महाराज के अधिकार को मान्य नहीं किया । पुणे जिले में भीमा नदी के किनारे खेड़ नामक स्थान पर शाहू महाराज और महारानी ताराबाई के सैनिकों के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में शाहू महाराज की विजय हुई । उन्होंने सातारा को जीत लिया और स्वयं का राज्याभिषेक करवाया । सातारा मराठा राज्य की राजधानी बनी ।

शाहू महाराज

कुछ समय तक शाहू महाराज और महारानी ताराबाई के बीच का विरोध जारी रहा । ई.स. १७१० में महारानी ताराबाई ने पन्हालगढ़ पर अपने अल्पायु पुत्र शिवाजी (द्वितीय) की छत्रपति के रूप में घोषणा की । तब से मराठाशाही में सातारा राज्य के अलावा कोल्हापुर का स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आया।

शाहू महाराज का पूर्व जीवन मुगलों की छावनी में बीता था । अतः उन्होंने मुगलों की राजनीति को बहुत निकट से देखा था । उत्तर भारत की राजनीति की बारीकियाँ उनके ध्यान में आ गई थीं । मुगल सत्ता के शक्तिशाली पक्ष और दुर्बल पक्ष से वे भली-भाँति अवगत हो गए थे । इसके अलावा मुगल दरबार के प्रभावशाली लोगों से उनका परिचय भी हुआ था । इन सभी बातों का उपयोग उन्हें बदलती परिस्थिति में मराठों की राजनीति की दिशा निश्चित करने के लिए हुआ ।

मराठों के राज्य को नष्ट करना; यह पहले से औरंगजेब की नीति थी परंतु उसके उत्तराधिकारियों ने इस नीति का त्याग किया था । फलतः अब मुगल सत्ता के साथ संघर्ष करने के स्थान पर उसके रक्षक के रूप में आगे आना और इसी में से अपनी सत्ता का विस्तार करना; यह नई राजनीतिक नीति मराठों ने अपनाई । नए मंदिर का निर्माण करवाने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य पुराने मंदिर के जीर्णोद्धार करने से मिलता है; यह नीतिसूत्र था।

मुगल सत्ता को जितना भय पश्चिमोत्तर से होने वाले ईरानी, अफगानी आक्रमणों से था; उतना ही खतरा आस-पास के स्थानीय सत्ताधीशों-पठान, राजपूत, जाट, रुहेलों से था । इसके अलावा दरबार में चलने वाली प्रतिस्पर्धा और आपसी संघर्ष के कारण भी मुगल सत्ता भीतर से खोखली हो चुकी थी। फलतः दिल्ली दरबार को मराठों की सहायता की आवश्यकता अनुभव हो रही थी ।

बालाजी विश्वनाथ : मुगलों की कैद से शाहू महाराज के मुक्त होने के बाद उन्होंने बालाजी विश्वनाथ भट को पेशवा बनाया । बालाजी मूलतः कोकण के श्रीवर्धन गाँव का था । वह पराक्रमी और अनुभवी था । उसने अनेक सरदारों को यह समझा-बुझाकर कि शाहू महाराज ही मराठी सत्ता के सच्चे अधिकारी हैं; उन्हें शाहू महाराज के पक्ष में कर लिया ।

कान्होजी आंग्रे मराठी नौसेना का प्रमुख था । उसने ताराबाई का पक्ष लिया और शाहू महाराज के प्रदेशों पर हमले किए । शाहू महाराज के सम्मुख जटिल स्थिति उत्पन्न हो गई । इस स्थिति में उन्होंने बालाजी को कान्होजी आंग्रे के विरुद्ध भेजा। बालाजी ने युद्ध टालकर कूटनीति से कान्होजी को शाहू महाराज के पक्ष में कर लिया ।

चौथ-सरदेशमुखी का आदेशपत्र : महाराष्ट्र में शाहू महाराज का स्थान दृढ़ करने के पश्चात बालाजी ने अपना ध्यान उत्तर की राजनीति की ओर मोड़ा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली के दरबार में फूट और अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। वहाँ सैयद भाइयों-अब्दुल्ला(हसन) और हुसैन अली का प्रभुत्व निर्माण हो गया था । बालाजी ने उनकी सहायता से ई.स.१७१९ में मुगल शासक से दक्खन के मुगल प्रदेश के कुछ स्थानों से चौथ तो कुछ स्थानों से सरदेशमुखी वसूल करने के आदेशपत्र प्राप्त किए । चौथ का अर्थ भू-राजस्व (लगान) का एक चौथाई हिस्सा तथा सरदेशमुखी का अर्थ संपूर्ण भू-राजस्व (लगान) का दसवाँ हिस्सा होता है ।

बाजीराव प्रथम

बाजीराव प्रथम : बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद शाहू महाराज ने ई.स.१७२० में उसके बेटे बाजीराव (प्रथम) को पेशवा पद पर नियुक्त किया । उसने अपने पेशवा पद के बीस वर्ष के कार्यकाल में मराठी सत्ता का विस्तार किया ।

पालखेड़ में निजाम की पराजय : मुगल शासक फर्रूकसियर ने निजाम-उल-मुल्क को दक्खन के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया। ई.स.१७१३ में निजाम ने हैदराबाद में अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने का प्रयास किया । मुगल शासक ने मराठों को दक्षिण के मुगल प्रदेश से चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने के अधिकार दिए थे । निजाम ने इस अधिकार को विरोध किया । उसने पुणे परगना का कुछ हिस्सा जीत लिया । बाजीराव ने निजाम पर अंकुश लगाने का निश्चय किया । उसने औरंगाबाद के समीप पालखेड़ में निजाम को पराजित किया । चौथ-सरदेशमुखी वसूल करने के मराठों के अधिकार को निजाम ने स्वीकार किया ।

बाजीराव जानता था कि मुगल सत्ता दुर्बल हो चुकी है । इसलिए उत्तर में सत्ता का विस्तार करने के लिए अधिक अवसर है । शाहू महाराज ने बाजीराव की इस नीति का समर्थन किया ।

मालवा : वर्तमान मध्य प्रदेश में मालवा क्षेत्र है। यह क्षेत्र मुगलों के अधिकार में था । बाजीराव ने अपने भाई चिमाजी अप्पा के नेतृत्व में मल्हारराव होळकर, राणोजी शिंदे और उदाजी पवार को मालवा में भेजा । वहाँ उन्होंने अपने केंद्र स्थापित किए ।

बुंदेलखंड : वर्तमान मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के झाँसी, पन्ना, सागर आदि नगरों के परिसर का प्रदेश बुंदेलखंड है ।

छत्रसाल राजा ने बुंदेलखंड में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था। इलाहाबाद का मुगल सूबेदार मुहम्मद खान बंगश ने बुंदेलखंड पर आक्रमण किया । उसने छत्रसाल को पराजित किया । तब छत्रसाल ने बाजीराव से सहायता की प्रार्थना की ।

बाजीराव विशाल सेना लेकर बुंदेलखंड पहुँचा । उसने बंगश को पराजित किया । छत्रसाल ने बाजीराव का बड़ा सम्मान किया । इस प्रकार मराठों ने मालवा और बुंदेलखंड में अपना वर्चस्व स्थापित किया ।

बाजीराव ने मुगल शासक से मालवा की सूबेदारी माँगी । मुगल शासक ने यह माँग अस्वीकार

क्या तुम जानते हो ?

छत्रसाल ने सहायता के लिए बाजीराव को एक पत्र लिखा । इस पत्र में छत्रसाल ने लिखा,'जो गत आह गजेंद्र की, वह गत आई है आज । बाजी जान बुंदेल की, बाजी राखो लाज ।' (अर्थात मेरी हालत वैसी ही दयनीय हो गई है; जैसे किसी मगरमच्छ ने गजेंद्र के पैर मुँह में पकड़ लिए हों । मैं विकट संकट में हूँ । अब मेरी सहायता आप ही कर सकते हैं ।)

की । अतः मार्च १७३७ में बाजीराव दिल्ली पर आक्रमण करने के उद्देश्य से दिल्ली की सीमा पर जा पहुँचा।

भोपाल की लड़ाई : बाजीराव के आक्रमण से मुगल शासक परेशान हो गया । दिल्ली की रक्षा करने हेतु उसने निजाम को बुला लिया । विशाल सेना के साथ निजाम ने बाजीराव पर आक्रमण किया । बाजीराव ने उसे भोपाल में पराजित किया । निजाम ने मराठों को मालवा की सूबेदारी का आदेशपत्र मुगल शासक से प्राप्त करवा देना स्वीकार किया ।

पुर्तगालियों की पराजय : कोकण के तटीय क्षेत्र में वसई, ठाणे पुर्तगालियों के अधिकार में थे । पुर्तगाली शासक प्रजा पर अत्याचार करते थे । बाजीराव ने अपने भाई चिमाजी अप्पा को उनका दमन करने के लिए भेजा । उसने ठाणे और आसपास का प्रदेश जीत लिया । इसके पश्चात ई.स.१७३९ में उसने वसई के किले को घेर लिया । किला बहुत मजबूत था । पुर्तगालियों के पास प्रभावी तोपें थीं परंतु चिमाजी ने बड़ी जीवटता से घेरा जारी रख पुर्तगालियों को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश किया । परिणामतः वसई का किला और पुर्तगालियों का बहुत बड़ा प्रदेश मराठों के अधिकार में आया ।

बाजीराव की मृत्यु : ईरान का शासक नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया । शाहू महाराज के आदेश पर बाजीराव विशाल सेना लेकर उत्तर की ओर चल पड़ा । वह बुरहानपुर तक पहुँचा परंतु तब तक नादिरशाह दिल्ली की विपुल संपत्ति लूटकर अपने देश को लौट गया था । अप्रैल १७४० में नर्मदा के तट पर रावेरखेड़ी में बाजीराव की मृत्यु हुई ।

बाजीराव उत्तम सेनानी था । बाजीराव ने अपनी वीरता और पराक्रम से उत्तर भारत में मराठों का वर्चस्व स्थापित किया । उसने मराठी सत्ता को संपूर्ण भारत के स्तर पर एक शक्तिशाली सत्ता के रूप में स्थान प्राप्त करवाया । उसके कार्यकाल में शिंदे, होलकर, पवार, गायकवाड़ घराने आगे आए ।

स्वाध्याय

१. किसे कहते हैं ?

(१) चौथ –

(२) सरदेशमुखी –

२. एक शब्द में लिखो :

(१) बालाजी मूलतः कोकण के इस गाँव का था....।

(२) बुंदेलखंड में इसका राज्य था ....।

(३) बाजीराव की मृत्यु इस स्थान पर हुई ....।

(४) इसने पुर्तगालियों को हराया ....।

३. लेखन करो :

(१) कान्होजी आंग्रे (२) पालखेड़ का युद्ध

(३) बालाजी विश्वनाथ (४) बाजीराव प्रथम

४. कारण लिखो :

(१) मराठाशाही में दो स्वतंत्र राज्यों का निर्माण हुआ।

(२) आजमशाह ने छत्रपति शाहू महाराज को मुक्त किया ।

(३) दिल्ली शासक को मराठों की सहायता की आवश्यकता अनुभव हुई ।

उपक्रम

महारानी ताराबाई का चरित्र प्राप्त करो और उनके जीवन के उन प्रसंगों को कक्षा में अभिनय सहित प्रस्तुत करो; जो प्रसंग तुम्हें प्रभावित करते हैं।